विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा
ई- पत्रिका अंक- 57, जुलाई -2025

☎0120-4545608 WEBSITE: ssmnoida.in GMAIL: ssm.noida@gmail.com

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर ,सी - 41, सेक्टर – 12, नोएडा

मासिक ई-पत्रिका, जुलाई – 2025

ज्ञानोदय (अंक-57)

संरक्षक मंडल

श्री प्रताप मेहता

श्री प्रदीप भारद्वाज

कृष्ण कुमार बंसल जी

राजीव नाइक जी

नितीश आर्य जी

जितेन्द्र कुमार गौतम जी

सुशील कुमार जी

मार्गदर्शक

श्री देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

संपादक

श्री लेखराज सिंह (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

संपादक मंडल

श्री दीपक कुमार, ब॰अनु सिंह

अनुक्रमणिका

- संपादकीय
- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- हरियाली तीज
- रक्षाबन्धन
- महर्षि अरविन्द जयंती
- स्वतंत्रता दिवस
- श्री कृष्ण जन्माष्टमी
- राष्ट्रीय खेल दिवस
- श्री लज्जाराम तोमर जी की जयंती
- गुरु पूर्णिमा
- विद्यारंभ संस्कार
- आचार्य-अभिभावक गोष्ठी
- वेश प्रतियोगिता
- अतिथियों का विद्यालय भ्रमण
- हरेला एवं पौधरोपण कार्यक्रम
- आचार्य अभिभावक प्रशिक्षण
- स्वर्ण प्राशन
- कारगिल दिवस
- मेहंदी प्रतियोगिता
- सहज योग
- सुलेख प्रतियोगिता
- तुलसीदास जयंती
- विज्ञानं एवं पर्यावरण सप्ताह
- जन्मोत्सव हवन कार्यक्रम
- बताओ तो जानें
- पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

संपादकीय

"समय का करें सम्मान सफलता होगी आपका नाम"

विद्यार्थी जीवन में इस कथन को चरितार्थ करते हुए यह कहना उचित होगा कि जो भैया/बहिन समय का सही उपयोग करते हैं। वह पढ़ाई, खेल, मनोरंजन और अन्य गतिविधियों में संतुलन बनाकर चलते हैं। ऐसे विद्यार्थी ही जीवन में सफलता को प्राप्त करते हैं।

भैया/बहिनों के जीवन में समय प्रबंधन के अनेक महत्व हैं-

- **अनुशासन और आत्मनिर्भरता का विकास-** समय का प्रबंधन करना छात्रों को अनुशासन सिखाता है। वे स्वयं तय करते हैं कि किस काम को कब करना है — यह उन्हें आत्मनिर्भर बनाता है।
- **निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है-** जब विद्यार्थी तय करते हैं कि कौन-सा कार्य पहले करना है, कौन-सा बाद में — तो उनकी सोचने और निर्णय लेने की क्षमता मजबूत होती है।
- **तनाव से मुक्ति-** परीक्षा के समय अक्सर छात्र तनाव में आ जाते हैं क्योंकि उन्होंने समय रहते तैयारी नहीं की होती। अगर वे नियमित समयबद्ध पढ़ाई करें, तो तनाव की कोई जगह नहीं रहती।
- **समय की महत्व का अनुभव होता है-** जो विद्यार्थी समय का मूल्य समझ लेता है, वह जीवन में कभी समय की बर्बादी नहीं करता और हर अवसर का पूरा लाभ उठाता है।

अतः हर विद्यार्थी को चाहिए कि वह समय को अपने जीवन का सबसे बड़ा शिक्षक माने और उसका सम्मान करे। हमारा शिशु मंदिर परिवार भी छोटी-छोटी गतिविधियों जैसे टास्क बेस्ड एक्टिविटी, एक नियत दिनचर्या बनाना और उसका पालन करना। प्रत्येक दिन के लिए लक्ष्य तय करना। पढ़ाई, खेल, आराम और मनोरंजन में संतुलन बनाए रखना आदि गतिविधियों के माध्यम से भैया/बहिनों में समय प्रबंधन के कौशल विकास करने में मदद करता है ताकि भविष्य में भैया/बहिन अपने लक्ष्य को सुगमता से प्राप्त कर सके।

अनु सिंह
अंक सम्पादक (ज्ञानोदय)

प्रधानाचार्य जी की कलम से

मनुष्य का चरित्र और व्यक्तित्व केवल उसकी शिक्षा या बाहरी रूप-रंग से नहीं, बल्कि उसके संस्कारों और नैतिक मूल्यों से परखा जाता है। अच्छे संस्कार और नैतिक मूल्य व्यक्ति को न केवल एक अच्छा नागरिक बनाते हैं, बल्कि समाज में उसका सम्मान भी बढ़ाते हैं।

संस्कार वे भावनात्मक और व्यवहारिक आदर्श हैं जो हमें हमारे परिवार, समाज और परंपराओं से प्राप्त होते हैं। जैसे—बड़ों का सम्मान करना, छोटों को स्नेह देना, सत्य बोलना, दूसरों की मदद करना आदि। वहीं नैतिक मूल्य वे सिद्धांत हैं जो सही और गलत के बीच फर्क करना सिखाते हैं—जैसे ईमानदारी, अनुशासन, दया, क्षमा, सहनशीलता और कर्तव्यपरायणता। बाल्यावस्था में माता-पिता और शिक्षक ही बच्चों में अच्छे संस्कारों की नींव रखते हैं। बचपन में जो मूल्य सिखाए जाते हैं, वही जीवनभर साथ निभाते हैं। यदि कोई बच्चा बचपन से ही सत्य बोलने, अनुशासन में रहने, और दूसरों की भावनाओं का सम्मान करने का आदी होता है, तो वह आगे चलकर एक जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बनता है।

नैतिक मूल्यों का हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में विशेष महत्व है। एक ईमानदार व्यक्ति न केवल अपने काम में निष्ठावान होता है, बल्कि समाज को भी प्रेरित करता है। यदि हर व्यक्ति अपने जीवन में नैतिक मूल्यों को अपनाए, तो भ्रष्टाचार, हिंसा, धोखाधड़ी जैसे अपराधों में स्वतः ही कमी आ जाएगी।

आज के तकनीकी युग में जहां जीवन तेज़ गति से आगे बढ़ रहा है, वहीं नैतिक मूल्यों में गिरावट भी देखी जा रही है। युवा वर्ग में स्वार्थ, प्रतिस्पर्धा और दिखावे की प्रवृत्ति बढ़ गई है। ऐसे में परिवार और समाज की जिम्मेदारी बनती है कि वे बच्चों को केवल अच्छी शिक्षा ही नहीं, बल्कि अच्छे संस्कार और नैतिक शिक्षा भी दें। विद्यालयों में भी नैतिक शिक्षा को प्रमुखता दी जानी चाहिए। पाठ्यक्रम के अलावा कहानियों, नाटकों और सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में सही और गलत का बोध कराया जा सकता है।

सच्चे अर्थों में विकास तभी संभव है जब समाज के हर व्यक्ति में मानवता, करुणा और ईमानदारी जैसे मूल्य विद्यमान हों। अच्छे संस्कार और नैतिक मूल्य न केवल व्यक्ति को महान बनाते हैं, बल्कि समाज को भी सशक्त और समृद्ध बनाते हैं।

देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मन्दिर, नोएडा

हरियाली तीज

हर साल सावन माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि पर हरियाली तीज मनाई जाती है। इस दिन महिलाएं पति की लंबी उम्र, तरक्की और सुखमय जीवन के लिए निर्जला उपवास रखती हैं। इसके अलावा विधि विधान से शिव पूजन करते हुए दान दक्षिणा जैसे पुण्य कार्य किए जाते हैं।

हरियाली तीज की कथा -पौराणिक कथा के अनुसार देवी पार्वती ने भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए कठोर तपस्या की थी उन्होंने 107 बार जन्म लिया और हर जन्म में भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए तपस्या की 108 में जन्म में उन्होंने हिमालय राज की पुत्री पार्वती के रूप में जन्म लिया माता पार्वती बचपन से ही भगवान शिव को पति के रूप में पाना चाहती थी इसके लिए उन्होंने कठोर तपस्या की एक दिन नारद मुनि हिमालय के पास पहुंचे और उन्हें बताया कि भगवान विष्णु पार्वती से विवाह करना चाहते हैं। यह सुनकर हिमालय बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने पार्वती का विवाह विष्णु जी से तय कर दिया जब माता पार्वती को यह बात पता चली तो वह बहुत दुखी हुई और अपनी सखियों के साथ एक एकांत जंगल में चली गई वहां उन्होंने रेत से शिवलिंग बनाया और भगवान शिव की पूजा अर्चना कर शुरू कर दी उनके कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव प्रकट हुए और पार्वती को मनोकामना पूर्ण होने का वरदान दिया। माता पार्वती के पिता पर्वतराज हिमालय भी उन्हें ढूंढते हुए वहां पहुंच गए जब उन्हें सच्चाई का पता चला तो उन्होंने भगवान शिव से पार्वती का विवाह करने का वचन दिया। इस प्रकार भगवान शिव और पार्वती का विवाह हुआ।

कथा का महत्व - यह कथा हरियाली तीज के महत्व को बताती है इस दिन भगवान शिव का और पार्वती का पुनर्मिलन हुआ था यह व्रत मुख्य रूप से उत्तर भारत और नेपाल में मनाया जाता है। इस दिन सुहागिन महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र और अच्छे स्वास्थ्य के लिए व्रत रखती हैं और कुंवारी लड़कियां मनचाहे वर की प्राप्ति के लिए यह व्रत रखती हैं।

हरियाली तीज का महत्व - हरियाली तीज का त्योहार प्रकृति और प्रेम का त्यौहार है इस दिन महिलाएं हरे रंग के कपड़े पहनती हैं और मेहंदी लगाती हैं।यह त्यौहार खुशी उत्साह और उल्लास का प्रतीक है

रजनी बिष्ट (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

रक्षाबंधन

भूमिका - रक्षाबंधन भारतीय संस्कृति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और भावनात्मक त्योहार है। यह पर्व भाई और बहन के प्रेम, स्नेह और सुरक्षा के बंधन को समर्पित होता है। रक्षाबंधन न केवल एक परंपरा है, बल्कि यह रिश्तों को मजबूती देने का प्रतीक भी है।

रक्षाबंधन का अर्थ - 'रक्षा' का मतलब है सुरक्षा और 'बंधन' का मतलब है बंधन। अर्थात् रक्षाबंधन वह पर्व है जिसमें बहन अपने भाई की लंबी उम्र, खुशहाली और सुरक्षा की कामना करती है और बदले में भाई जीवनभर उसकी रक्षा करने का वचन देता है।

कब और कैसे मनाया जाता है - रक्षाबंधन श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है, जो आमतौर पर अगस्त महीने में आता है। इस दिन बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी बाँधती हैं, तिलक करती हैं, मिठाई खिलाती हैं और शुभकामनाएँ देती हैं। भाई उपहार देकर बहन को खुश करते हैं और उसकी रक्षा का वादा करते हैं।

रक्षाबंधन की पौराणिक कथाए - कृष्ण और द्रौपदी की कथा-महाभारत में एक प्रसिद्ध प्रसंग है जब भगवान श्रीकृष्ण ने शिशुपाल का वध किया था और उनका हाथ कट गया था। द्रौपदी ने अपने आँचल से उनका खून रोकने के लिए कपड़ा बाँधा था। इस प्रेम भरे कार्य से भावुक होकर कृष्ण ने उसे अपनी बहन मान लिया और जीवनभर उसकी रक्षा करने का संकल्प लिया।

समाज में रक्षाबंधन का महत्व - रक्षाबंधन केवल भाई-बहन के बीच सीमित नहीं है। यह समाज में आपसी प्रेम, एकता और सुरक्षा का संदेश भी देता है। आजकल लोग सैनिकों, पर्यावरण, नदियों, वृक्षों और अन्य सामाजिक विषयों से जुड़कर भी प्रतीकात्मक रूप से राखी बाँधते हैं, जो इस पर्व को और अधिक व्यापक और समर्पण भरा बनाता है।

निष्कर्ष - रक्षाबंधन न केवल एक परंपरा है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति में रिश्तों की मिठास और विश्वास का अद्भुत उदाहरण है। यह त्योहार हमें याद दिलाता है कि प्यार और कर्तव्य, चाहे कितनी भी दूरी हो, दिलों को जोड़ते हैं।

शिवानी शुक्ला (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

महर्षि अरविन्द जयंती

श्री अरबिंदो घोष जी भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी, विचारक, योगी, कवि और दार्शनिक थे। इनका जन्म 15 अगस्त 1872 को कोलकाता (तब कलकत्ता) में हुआ था। श्री अरबिंदो की जयंती 15 अगस्त को मनाई जाती है, जो भारत के स्वतंत्रता दिवस के साथ संयोग से एक महान अवसर बन जाती है। अरबिंदो जी ने न केवल भारत की आज़ादी के लिए योगदान दिया, बल्कि भारतीय अध्यात्म, संस्कृति और शिक्षा को भी एक नई दिशा दी।उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा इंग्लैंड में प्राप्त की और फिर भारत लौटने के बाद स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाई। आरंभ में वे क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़े और अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ कई आंदोलन किए। लेकिन बाद में उन्होंने राजनीति से संन्यास लेकर अध्यात्म की ओर रुख किया।

पांडिचेरी (अब पुडुचेरी) में उन्होंने एक आश्रम की स्थापना की, जहाँ वे योग, ध्यान और भारतीय संस्कृति के प्रचार में लगे रहे। उनकी शिक्षाएँ "इंटीग्रल योग" (पूर्ण योग) के रूप में प्रसिद्ध हुईं, जो शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास का समन्वय करती हैं।

अरविन्द जी का विश्वास था कि मानव देवी शक्ति से समन्वित है और शिक्षा का लक्ष्य इस चेतना शक्ति का विकास करना है। इसीलिए वे मस्तिष्क को छठी ज्ञानेन्द्रिय मानते थे । शिक्षा का प्रयोजन इन छः ज्ञानेन्द्रियों का सदुपयोग करना सिखाना होना चाहिए।

''उनकी प्रमुख रचनाओं में "द लाइफ डिवाइन", "सावित्री", और "द सिंथेसिस ऑफ योगा" प्रमुख हैं।

निष्कर्ष:

श्री अरबिंदो घोष जी का जीवन और दर्शन आज भी हमें प्रेरणा देते हैं। उनकी शिक्षाएँ हमें आत्मविकास, राष्ट्रप्रेम और उच्च सोच की ओर प्रेरित करती हैं। उनकी जयंती पर हमें उनके विचारों को अपनाने और उन्हें आगे बढ़ाने का संकल्प लेना चाहिए।

"हमारी मुक्ति केवल राजनीतिक नहीं है, बल्कि आत्मिक और सांस्कृतिक भी होनी चाहिए।"

रूषा विश्नोई (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

स्वतंत्रता दिवस

15 अगस्त 1947 को हमारे इस मातृभूमि का पहला स्वतंत्रता दिवस था. आज जिस भूमि को हम अपना आज़ाद वतन मानते हैं उसे आज़ाद हुए 78 वर्ष हो चुके हैं. सोने की चिड़िया से ब्रिटिश कॉलोनी बनने से लेकर दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्रों में से एक बनने का भारत देश का लंबा सफर सराहनीय और विख्यात है. आज हम इस आज़ादी की हवा में सांस ले पा रहे हैं क्यूंकि हमारे पूर्वजों ने हमें यह आज़ादी दिलाने के लिए 200 वर्ष तक संघर्ष किया। इसलिए आजादी का यह जश्न पूरे देश में देशभक्ति और उत्साह के साथ मनाया जाता है। आज के दिन विद्यार्थियों में विशेष उत्सुकता देखी जाती है. देश भर के स्कूलों में इस अवसर को उत्साह के साथ मनाते हैं. देश के बच्चे और युवा ही इसका भविष्य है. इनमें देशभक्ति की भावना जगाने के लिए निबंध लेखन, स्पीच कॉम्पीटीशन्स, नाटक, पेट्रियोटिक गीत और नृत्य के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जिनमे बच्चे बढ़-चढ़ के हिस्सा लेते हैं.

हर साल पंद्रह अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। पहले हम अंग्रेजों के गुलाम थे। उनके बढ़ते हुए अत्याचारों से सभी भारतवासी त्रस्त हो गए और तब विद्रोह की ज्वाला भड़की और देश के अनेक वीरों ने प्राणों की बाजी लगाई, गोलियां खाईं और अंतत: आजादी पाकर ही चैन लिया। सदियों की गुलामी के पश्चात 15 अगस्त सन् 1947 के दिन भारत देश आजाद हुआ। इस दिन हमारा देश आजाद हुआ, इसलिए इसे स्वतंत्रता दिवस कहते हैं। प्रधानमंत्री राष्ट्र के नाम संदेश देते हैं। इस दिन सभी शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाती है। अनेक सभाओं और कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। स्वतंत्रता की संघर्ष गाथा- अंग्रेजों के अत्याचारों और अमानवीय व्यवहारों से त्रस्त भारतीय जनता एकजुट होकर इससे छुटकारा पाने हेतु कृतसंकल्प हो गई। सुभाषचंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद ने क्रांति की आग फैलाई और अपने प्राणों की आहुति दी। तत्पश्चात सरदार वल्लभभाई पटेल, गांधी जी, नेहरू जी ने सत्य, अहिंसा और बिना हथियारों की लड़ाई लड़ी। सत्याग्रह आंदोलन किए, लाठियां खाईं, कई बार जेल गए और अंग्रेजों को हमारा देश छोड़कर जाने पर मजबूर कर दिया। इस तरह 15 अगस्त 1947 का दिन हमारे लिए 'स्वर्णिम दिन' बना। हम, हमारा देश स्वतंत्र हो गए। अत: यह दिन 1947 से आज तक हम बड़े उत्साह और प्रसन्नता के साथ मनाते चले आ रहे हैं।

शिवानी शर्मा (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी हिंदू धर्म का एक प्रमुख त्योहार है, जो भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। यह त्योहार हर साल भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है।

श्रीकृष्ण जन्म का कारण:

भगवान श्रीकृष्ण का जन्म धर्म की स्थापना और अधर्म के नाश के लिए हुआ था। जब धरती पर अत्याचार, अन्याय और पाप बढ़ गए, तब भगवान विष्णु ने श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लिया। उनका जन्म मथुरा के राजा कंस के अत्याचारों से जनता को मुक्त कराने के लिए हुआ।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी मनाने के कारण:

1. भगवान के जन्म की खुशी में:- यह त्योहार भगवान श्रीकृष्ण के जन्म की खुशी में मनाया जाता है। भक्त इस दिन उपवास रखते हैं और रात 12 बजे श्रीकृष्ण के जन्म का उत्सव मनाते हैं।

2. अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक:- श्रीकृष्ण का जीवन सत्य, प्रेम, करुणा और धर्म का प्रतीक है। उन्होंने अन्याय और अधर्म का नाश किया, इसलिए उनका जन्मदिन धर्म की जीत के रूप में मनाया जाता है।

3. भक्ति और आस्था का पर्व:- इस दिन भक्तजन भजन-कीर्तन, झांकियां, दही-हांडी आदि के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का स्मरण करते हैं और भक्ति में लीन हो जाते हैं।

4. शिक्षा देने वाला पर्व:- श्रीकृष्ण ने गीता में जो उपदेश दिए, वे आज भी जीवन का मार्गदर्शन करते हैं। जन्माष्टमी हमें यह स्मरण कराती है कि जीवन में सच्चाई, कर्म और भक्ति का पालन करना चाहिए।

शिवानी शर्मा (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

राष्ट्रीय खेल दिवस

भूमिका: खेल केवल मनोरंजन या शारीरिक व्यायाम का माध्यम नहीं, बल्कि यह अनुशासन, एकता, सहनशीलता और आत्मविश्वास का परिचायक है। भारत में हर वर्ष 29 अगस्त **को** राष्ट्रीय खेल दिवस (National Sports Day) के रूप में मनाया जाता है। यह दिन देश के महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

मेजर ध्यानचंद का योगदान: मेजर ध्यानचंद को 'हॉकी का जादूगर' कहा जाता है। उन्होंने अपने कौशल से भारतीय हॉकी को विश्व में गौरव दिलाया। 1928, 1932 और 1936 के ओलंपिक में भारत ने उनकी अगुआई में स्वर्ण पदक जीते। उनका जीवन युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत है।

खेल का समाज में प्रभाव: खेल व्यक्ति को मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक रूप से मजबूत बनाते हैं। ये आत्मानुशासन, समयबद्धता और सहयोग की भावना विकसित करते हैं। आज की युवा पीढ़ी को मोबाइल और इंटरनेट से हटाकर मैदान की ओर लाना अत्यंत आवश्यक हो गया है। राष्ट्रीय खेल दिवस इसी दिशा में एक मजबूत कदम है।

सरकार की भूमिका: भारत सरकार द्वारा 'खेलो इंडिया' जैसे अभियान शुरू किए गए हैं ताकि गांव-गांव तक खेल संस्कृति को बढ़ावा मिल सके। इस दिन राष्ट्रपति द्वारा राजीव गांधी खेल रत्न, अर्जुन पुरस्कार, ध्यानचंद पुरस्कार और द्रोणाचार्य पुरस्कार जैसे सम्मान दिए जाते हैं।

निष्कर्ष: राष्ट्रीय खेल दिवस केवल एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि यह एक संदेश है कि खेलों को जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए। युवा शक्ति को खेल के माध्यम से सशक्त बनाकर हम एक स्वस्थ, अनुशासित और उज्जवल राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। आइए, हम सभी संकल्प लें कि हम खेलों को प्रोत्साहन देंगे, खुद भी खेलेंगे और दूसरों को भी खेलने के लिए प्रेरित करेंगे। यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी हमारे महान खिलाड़ियों के प्रति।

"जो खेले, वो खिले। जो दौड़े, वो बढ़े। भारत तभी आगे बढ़ेगा जब हर युवा खेलेगा।"

शिवनंदन जी (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

श्री लज्जाराम तोमर जी की जयंती

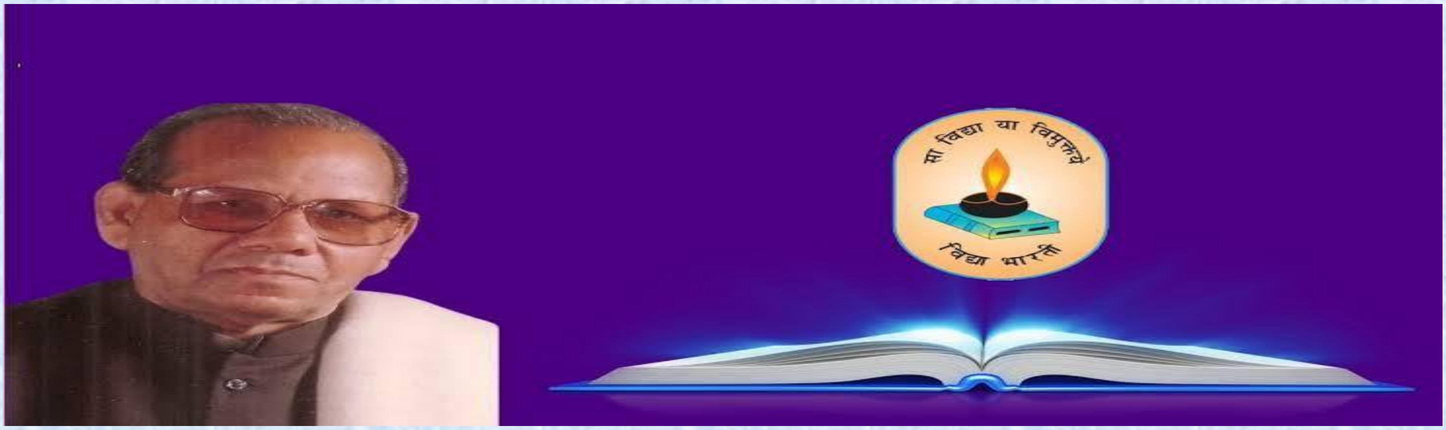

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में श्री लज्जाराम तोमर जी की जयंती मनाई गई। जो विद्या भारती के स्तम्भ भी कहे जाते हैं। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने भैया/बहिनों को विद्या भारती के बारे में बताते हुए कहा कि भारत में लाखों सरकारी एवं निजी विद्यालय हैं; पर शासकीय सहायता के बिना स्थानीय हिन्दू जनता के सहयोग एवं विश्वास के बल पर काम करने वाली संस्था 'विद्या भारती' सबसे बड़ी शिक्षा संस्था है। इसे देशव्यापी बनाने में जिनका बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा, वे थे 21 जुलाई, 1930 को गांव वघपुरा (मुरैना, म.प्र.) में जन्मे श्री लज्जाराम तोमर।

लज्जाराम जी के परिवार की उस क्षेत्र में अत्यधिक प्रतिष्ठा थी। मेधावी छात्र होने के कारण सभी परीक्षाएं उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने 1957 में एम.ए तथा बी.एड किया। उनकी अधिकांश शिक्षा आगरा में हुई। 1945 में वे संघ के सम्पर्क में आये। उस समय उ.प्र. के प्रांत प्रचारक थे श्री भाउराव देवरस। अपनी पारखी दृष्टि से वे लोगों को तुरंत पहचान जाते थे। लज्जाराम जी पर भी उनकी दृष्टि थी। अब तक वे आगरा में एक इंटर

कालिज में प्राध्यापक हो चुके थे। उनकी गृहस्थी भी भली प्रकार चल रही थी। लज्जाराम जी इंटर कालिज में और उच्च पद पर पहुंच सकते थे; पर भाउराव के आग्रह पर वे सरकारी नौकरी छोड़कर सरस्वती शिशु मंदिर योजना में आ गये। यहां शिक्षा संबंधी उनकी कल्पनाओं के पूरा होने के भरपूर अवसर थे। उन्होंने अनेक नये प्रयोग किये, जिसकी ओर विद्या भारती के साथ ही अन्य सरकारी व निजी विद्यालयों के प्राचार्य तथा प्रबंधक भी आकृष्ट हुए। आपातकाल के विरोध में उन्होंने जेल यात्रा भी की।

इन्हीं दिनों उनके एकमात्र पुत्र के देहांत से उनका मन विचलित हो गया। वे छात्र जीवन से ही योग, प्राणायाम, ध्यान और साधना करते थे। अतः इस मानसिक उथल-पुथल में वे संन्यास लेने पर विचार करने लगे; पर भाउराव देवरस उनकी अन्तर्निहित क्षमताओं को जानते थे। उन्होंने उनके विचारों की दिशा बदल कर उसे समाजोन्मुख कर दिया। उनके आग्रह पर लज्जाराम जी ने संन्यास के बदले अपना शेष जीवन शिक्षा विस्तार के लिए समर्पित कर दिया।

उस समय तक पूरे देश में सरस्वती शिशु मंदिर के नाम से हजारों विद्यालय खुल चुके थे; पर उनका कोई राष्ट्रीय संजाल नहीं था। 1979 में सब विद्यालयों को एक सूत्र में पिरोने के लिए ‘विद्या भारती’ का गठन किया गया और लज्जाराम जी को उसका राष्ट्रीय संगठन मंत्री बनाया गया। उन्हें पढ़ने और पढ़ाने का व्यापक अनुभव तो था ही। इस दायित्व के बाद पूरे देश में उनका प्रवास होने लगा। जिन प्रदेशों में विद्या भारती का काम नहीं था, उनके प्रवास से वहां भी इस संस्था ने जड़ें जमा लीं।

विद्या भारती की प्रगति को देखकर विदेश के लोग भी इस ओर आकृष्ट हुए। अतः उन्हें अनेक अंतरराष्ट्रीय गोष्ठियों में आमन्त्रित किया गया। उन्होंने भारतीय चिंतन के आधार पर अनेक पुस्तकें भी लिखीं, जिनमें भारतीय शिक्षा के मूल तत्व, प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, विद्या भारती की चिंतन दिशा, नैतिक शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार आदि प्रमुख हैं।

उनके कार्यों से प्रभावित होकर उन्हें कई संस्थाओं ने सम्मानित किया। कुरुक्षेत्र के गीता विद्यालय परिसर में उन्होंने संस्कृति संग्रहालय की स्थापना कराई; पर इसी बीच वे कैंसर से पीड़ित हो गये। समुचित चिकित्सा के बाद भी उनके स्वास्थ्य में सुधार नहीं हुआ। 17 नवम्बर, 2004 को विद्या भारती के निराला नगर, लखनऊ स्थित परिसर में उनका शरीरांत हुआ। उनकी अंतिम इच्छानुसार उनका दाह संस्कार उनके पैतृक गांव में ही किया गया।

गुरु पूर्णिमा

दि०- 10/07/2025 दिन- गुरुवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में गुरु पूर्णिमा की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रीमान देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने भैया/ बहिनों को गुरु पूर्णिमा के महत्व को उजागर करते हुए बताया कि गुरु पूर्णिमा हिंदू धर्म में गुरु के सम्मान और उनके ज्ञान के प्रति आभार प्रकट करने का पावन पर्व है। यह दिन महर्षि वेदव्यास की जयंती के रूप में भी मनाया जाता है, जिन्होंने वेदों का संकलन किया। यह दिन अपने गुरु के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए भी समर्पित होता है क्योंकि गुरु शिष्य को अंधकार से उजाले की तरफ ले जाने के लिए उसका मार्ग प्रशस्त करते हैं साथ ही प्रोजेक्टर के माध्यम से आचार्या बहिन इशिका जी व रचना शर्मा जी ने भी जयंती के धार्मिक व आध्यात्मिक महत्व का वर्णन किया।

विद्यारंभ संस्कार

विद्या भारती से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु वाटिका
सी–41, सैक्टर–12, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)
विद्यारंभ संस्कार
Shot on OnePlus
Powered by Triple Camera

Shot on OnePlus
Powered by Triple Camera

Shot on OnePlus
Powered by Triple Camera

विद्यारंभ संस्कार
Shot on OnePlus
Powered by Triple Camera

Shot on OnePlus
Powered by Triple Camera

दिनांक- 10/07/2025 दिन बृहस्पतिवार को सरस्वती शिशु मंदिर में गुरु पूर्णिमा जयंती के साथ-साथ भैया/बहिनों के उज्जवल भविष्य के लिए विद्यारंभ संस्कार का कार्यक्रम किया गया। इस विद्यारंभ संस्कार में भैया/बहिनों द्वारा हवन कराया गया। हवन करने के पश्चात भैया/बहिनों को अभिभावकों की सहायता से रोली और चावल के साथ मंत्र उच्चारण विधि से ओम, सरस्वती माता और गणेश जी को तिलक लगाकर पुष्प अर्पित किया। हिंदू धर्म के अनुसार यह 16 संस्कारों में से दसवां संस्कार है। विद्यारंभ संस्कार करने के बाद ही भैया/बहिनों की पढ़ाई आरंभ होती है। इस अवसर पर विद्यालय प्रबंध समिति से राजीव नायक जी, प्रदीप जी, प्रताप मेहता जी, जितेंद्र गौतम जी,के.के बंसल जी एवं विद्यालय के प्रधानाचार्य देवेंद्र जी वह समस्त विद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

आचार्य-अभिभावक गोष्ठी

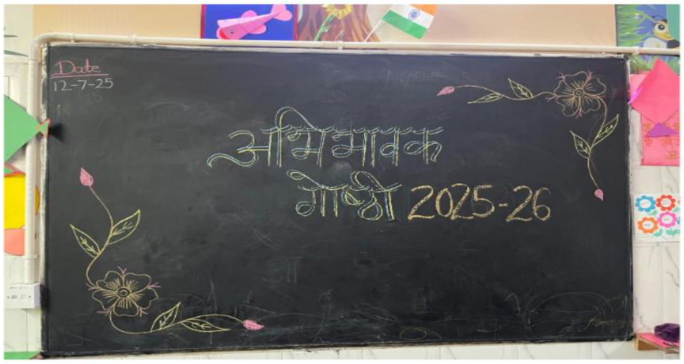

दिनांक 12.7.2025 को विद्यालय में आचार्य अभिभावक गोष्ठी आयोजित की गई। इसके माध्यम से आचार्य व अभिभावक के बीच छात्रों की प्रगति पर चर्चा हुई तथा शैक्षिक गतिविधि से अभिभावकों को अवगत कराया गया।

वेश प्रतियोगिता

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में दिनांक- 14/07/25 दिन सोमवार को वेश प्रतियोगिता आयोजित की गई। छात्रों को विद्यालय की वेशभूषा के प्रति जागरूक करने और उसे व्यवस्थित रखने के लिए इसका आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता छात्रों को अपनी वेशभूषा का ध्यान रखने, उसे साफ-सुथरा रखने और सही तरीके से पहनने के लिए प्रोत्साहित करती है। वेश प्रतियोगिता का उद्देश्य: छात्रों में अनुशासन और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देती है। विद्यालय की वेशभूषा छात्रों की पहचान होती है, और इस प्रतियोगिता के माध्यम से छात्रों को अपनी पहचान के प्रति गर्व महसूस कराया जाता है।

अतिथियों का विद्यालय भ्रमण

दिनांक -16/07/2025 को सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा के वंदना सत्र में English communication में प्रशिक्षण प्राप्त आचार्यों का विद्यालय भ्रमण हेतु आगमन।

हरेला एवं पौधरोपण कार्यक्रम

सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा में दिनांक- 16/07/2025 को हरेला पर्व एवं पौधारोपण कार्यक्रम मनाया गया। जिसमें मुख्य अतिथि श्री अरविंद भाई ओझा जी रहे जिन्होंने वंदना सत्र में मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंने भैया/बहिनों से वार्ता की और उन्हें बताया कि पौधा लगाने से ऊर्जा संरक्षण में मदद मिलती है। पौधे शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य में भी सुधार करते हैं। यह हमारे जीवन के लिए भी बहुत उपयोगी है इसलिए हमें प्रण करना चाहिए कि एक पौधा हम अवश्य लगाएं और उसकी देखभाल व संरक्षण करें। साथ ही उन्होंने विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रीमान देवेंद्र कुमार शर्मा जी, आचार्य बंधु/भगिनी व भैया/बहिनों के साथ मिलकर विद्यालय परिसर में पौधारोपण किया।

आचार्य अभिभावक प्रशिक्षण

सहयोग - भारत विकास परिषद्, नोएडा
विद्या भारती से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु वाटिका
सी-41, सैक्टर-12, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)
अभिभावक प्रशिक्षण
विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सी-41, सैक्टर-12
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में दिनांक- 21/07/2025 से 24/07/2025 को प्रशिक्षण के द्वितीय दिवस पर शिशु वाटिका में कक्षा अरुण Nursery, उदय (LKG) एवं प्रभात (UKG) के अभिभावकों का प्रशिक्षण कराया गया। प्रशिक्षण माता-पिता को अपने घरों में सकारात्मक और सहायक वातावरण बनाने के लिए मार्गदर्शन करता है, जिससे बच्चों का भावनात्मक और सामाजिक विकास हो सके। प्रशिक्षण के अंतर्गत अभिभावक को अनेक विषय आधारित क्रियाकलाप कराए गए जिसमें हिंदी विषय के संदर्भ में स्वर/व्यंजन क्रियाकलाप के माध्यम से अभिभावकों को शिक्षण दिया गया। इसी प्रकार गणित में गिनती व गुब्बारे की सहायता से रंगो का शिक्षण कराया गया। साथ ही भैया/बहिनों के दिनचर्या व स्वर्ण-प्राशन का विषय भी अभिभावकों के समक्ष रखा गया। प्रशिक्षण माता-पिता को अपने बच्चों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने और उनकी बात सुनने के लिए प्रेरित करता है, जिससे उनके बीच मजबूत संबंध स्थापित हो सकें। अंत में सरस्वती बालिका विद्यालय से आईं अतिथि श्रीमती गंगा भगत जी ने कार्यक्रम की प्रशंसा की साथ ही अभिभावकों ने कार्यक्रम के प्रति अपने सकारात्मक अभिमत दिए।

सुवर्णप्राशनं ह्येतन्मेधाग्निबलवर्धनम् ।
आयुष्यं मङ्गलं पुण्यं वृष्यं वर्ण्यं ग्रहापहम् ।।
मासात् परममेधावी व्याधिभिर्न च धृष्यते ।
षड्भिर्मासैः श्रुतधरः सुवर्णप्राशनाद्भवेत् ।।

स्वर्ण प्राशन

सुवर्णप्राशनं ह्येतन्मेधाग्निबलवर्धनम् ।
आयुष्यं मङ्गलं पुण्यं वृष्यं वर्ण्यं ग्रहापहम् ।।
मासात् परममेधावी व्याधिभिर्न च धृष्यते ।
षड्भिर्मासैः श्रुतधरः सुवर्णप्राशनाद्भवेत् ।।

दिनांक 25.7.2025 दिन शुक्रवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा के शिशु वाटिका में भैया/बहिनों को स्वर्ण प्राशन औषधि का सेवन करवाया गया। जिसमें विद्यालय के अध्यक्ष महोदय श्री प्रदीप भारद्वाज जी वह विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने भगवान धन्वंतरि जी की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन किया। तथा स्वर्ण प्राशन से होने वाले लाभ के विषय में बताया कि इसे भैया/बहिनों की रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी) बढ़ाने के लिए कराया जाता है। यह एक आयुर्वेदिक प्रक्रिया है जिसमें सोने (स्वर्ण) को जड़ी-बूटियों और शहद के साथ मिलाकर बच्चों को पिलाया जाता है। माना जाता है कि इससे भैया/बहिनों का शारीरिक और मानसिक विकास बेहतर होता है और वे बीमारियों से बचे रहते हैं।

कारगिल दिवस

दिनांक- 26/07/2025 को सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा में विजय कारगिल दिवस का कार्यक्रम मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय के आचार्य श्री धर्मेंद्र जी वह आचार्या बहिन भावना जी ने भैया/बहिनों को जयंती के विषय में जानकारी दी। तथा इससे संबंधित वीडियो क्लिप भैया/बहिनों को दिखाई गई। हर साल 26 जुलाई को भारत कारगिल विजय दिवस मनाता है। यह दिन उन वीर सपूतों की याद में समर्पित है जिन्होंने 1999 में पाकिस्तान के खिलाफ कारगिल युद्ध में अदम्य साहस दिखाया और भारत की सरहदों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। कारगिल युद्ध भारतीय सेना और पाकिस्तानी घुसपैठियों, जिन्हें पाकिस्तानी सेना का समर्थन प्राप्त था के बीच लड़ा गया था। यह लड़ाई जम्मू-कश्मीर के कारगिल सेक्टर में हुई थी और 26 जुलाई को भारत ने आधिकारिक रूप से विजय की घोषणा की थी। इस दिन को मनाने का उद्देश्य ना सिर्फ शहीदों को श्रद्धांजलि देना है, बल्कि देशभक्ति की भावना को मजबूत करना भी है। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने भैया/बहिनों से जयंती के विषय में अनेक प्रश्न पूछे जिसका भैया/बहिनों ने उत्साह पूर्वक उत्तर दिया।

मेहंदी प्रतियोगिता

दिनांक- 26/07/2025 को सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा में हरियाली तीज का पर्व भी मनाया गया जिसमें भैया बहनों की मेहंदी प्रतियोगिता कराई गई।

सहज योग

दिनांक- 28/07/2025 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में कक्षा चतुर्थ व पंचम के भैया/ बहिनों को सहज योग कराया गया। सहज योग, श्री माताजी निर्मला देवी द्वारा स्थापित एक ध्यान विधि है, जिसका अर्थ है "सहज मिलन" या "जन्म से ही साथ"। सहज योग ध्यान के माध्यम से, व्यक्ति मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक रूप से संतुलित हो जाता है। सहज योग एक सरल, प्राकृतिक और परिवर्तनकारी ध्यान विधि है जो भैया/बहिनों में कुंडलिनी जागरण के माध्यम से आत्म-साक्षात्कार और मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक संतुलन प्राप्त करने में मदद करती है। अंत में विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने योग समिति से आए अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

सुलेख प्रतियोगिता

दिनांक- 26/07/05 को विद्यालय में सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया। जिसमें सभी भैया/बहिनों ने सहभागिता की। इससे छात्रों में सुंदर लिखावट की आदत विकसित हुई और लेखन कौशल को भी बढ़ावा मिला। सुलेख प्रतियोगिता छात्रों को अपनी भाषा के प्रति रुचि और प्रेम विकसित करने में मदद करती है

तुलसीदास जयंती

विद्यालय में दिनांक - 30/07/25 को तुलसीदास जयंती मनाई गई। इस अवसर पर बहन ज्योती जी व विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेन्द्र शर्मा जी ने इनके महान कृतित्व के बारे में भैया/ बहिनों को महत्वपूर्ण जानकारी दी। इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि तुलसीदास जी की शिक्षाओं से प्रेरणा लेकर भैया/बहिनों अपने अंदर सद्गुणों और संस्कारों का विकास करें।

विज्ञान एवं पर्यावरण सप्ताह

दिनांक 25 जुलाई से 2 अगस्त 2025 तक सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा विद्यालय के नन्हे-मुन्ने भैया/बहिनों द्वारा होने वाली भिन्न-भिन्न गतिविधियों में विज्ञान एवं पर्यावरण सप्ताह के अंतर्गत विद्यालय में औषधीय पौधे लगाए गए। पर्यावरण संरक्षण से संबंधित पोस्टर, रेन-वाटर हार्वेस्टिंग माडल व पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का आयोजन श्रीमती डॉ० स्टेला अग्रवाल जी, श्रीमती दीपिका शर्मा जी, श्रीमती मोनिका चौहान जी, श्रीमती रजनी शर्मा जी द्वारा किया गया। यह प्रतियोगिता विभिन्न वर्गों में आयोजित की गई। विभिन्न क्रियाकलापों एवं प्रतियोगिता के माध्यम से भैया/बहिनों को विज्ञान व पर्यावरण में रुचि उत्पन्न होने लगी।भैया/बहिन कक्षा-शिक्षण के अतिरिक्त प्रकृति से जुड़कर अत्यंत प्रसन्न दिखाई दिए। प्रतियोगिता के माध्यम से भैया/बहिनों को आगे की प्रतियोगिता में तैयारी करने के लिए अनुभव मिलेगा। अंत में विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रीमान देवेन्द्र कुमार शर्मा जी ने भैया/बहिनों को विज्ञान व पर्यावरण सप्ताह के इसी क्रम में विद्यालय में उपस्थित रेन वाटर हार्वेस्टिंग के बारे में विस्तृत जानकारी दी |

जन्मोत्सव हवन कार्यक्रम

दिनांक- 30/07/2025 दिन बुधवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में कक्षा अरुण से पंचम तक के जुलाई माह में जन्मे भैया/बहिनों की दीर्घायु के लिए जन्मोत्सव पर हवन के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें अग्निहोत्र करते यजमान- प्रीति शर्मा, श्वेतांक वर्मा, रश्मि गुप्ता, विजय गुप्ता, खुशबू राय, विकास कुमार, विजय सिंह, सिंधु सिंह, रंजीत पाठक, कंचन कुमारी, और साथ ही अन्य अभिभावक बंधु भी उपस्थित रहे। विद्यालय में जन्मोत्सव हवन का मुख्य उद्देश्य छात्रों में समर्पण, संस्कार और देशभक्ति की भावना को बढ़ावा देना है। यह कार्यक्रम छात्रों को भारतीय संस्कृति, मूल्यों और परंपराओं से परिचित कराता है, और उन्हें राष्ट्र के प्रति समर्पित नागरिक बनाने में मदद करता है। हवन के माध्यम से छात्रों में भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता की भावना को बढ़ावा दिया जाता है।

बताओ तो जानें

Name: ______________________ Date: ______________

Solar System

Word Search

DIRECTIONS: Find and circle the vocabulary words in the grid. Look for the words both horizontally and vertically.

- ASTEROIDS
- COMETS
- EARTH
- GRAVITY
- JUPITER
- MARS
- MERCURY
- MOON
- NEPTUNE
- ORBIT
- PLANETS
- ROTATION
- SATURN
- SUN
- URANUS
- VENUS

S	R	A	M	M	F	O	N	Z	P	N	D	N	V	C
C	M	O	D	J	D	H	V	N	U	U	O	M	V	Z
K	A	D	K	R	Y	E	E	G	E	S	V	X	D	K
K	Z	K	Q	S	L	W	D	A	N	U	H	P	X	S
N	G	R	A	V	I	T	Y	G	U	N	V	L	F	N
O	E	A	E	P	A	Z	O	S	T	A	W	R	X	R
I	O	S	T	E	M	O	C	H	P	R	M	R	P	U
T	P	D	Y	T	H	T	R	A	E	U	Y	E	M	T
A	L	E	R	B	Q	H	N	U	N	G	R	T	V	A
T	A	G	U	F	S	A	S	T	E	R	O	I	D	S
O	N	N	C	Q	Y	P	M	F	D	J	G	P	W	U
R	E	A	R	X	F	R	X	M	A	V	L	U	R	N
L	T	R	E	S	T	P	T	O	N	T	D	J	O	E
N	S	V	M	E	N	L	O	O	T	I	B	R	O	V
L	X	V	L	Z	Z	A	W	N	F	H	N	U	O	W

© 2024 puzzles-to-print.com

पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

1) मनुष्य का चरित्र किस मूल्य से परखा जाता है?

2) हरियाली तीज इस विषय को दर्शाता है?

3) रक्षाबंधन कब मनाया जाता है?

4) महर्षि अरविंद जी की प्रमुख रचनाओ का नाम बताइए?

5) जन्माष्टमी कब मनाया जाता है?

6) मेजर ध्यानचंद किस खेल से संबंधित है?

7) लज्जा राम तोमर जी का शिक्षा के क्षेत्र में क्या योगदान था?

8) विद्यारंभ संस्कार 16 संस्कारों में से कौन सा संस्कार है?

9) स्वर्णप्राशन से क्या लाभ हैं?

10) कारगिल दिवस कब मनाया जाता है?

11) सहज योग का क्या अर्थ है?

12) आज़ादी दिलाने के लिए हमारे महापुरुषों ने कितने वर्षों तक संघर्ष किया?

आलोक- उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तर इसी अंक के लेखों में विद्यमान है अतः इसी अंक के उत्तर मान्य होंगे I

कक्षा- द्वितीय से पञ्चम तक के सभी भैया/बहिनों को ई- पत्रिका के पृष्ठ क्रमांक 37 व 38 में दिए प्रश्नों के उत्तर कक्षाचार्य जी के व्हाट्सप्प पर दिनांक - 20 अगस्त 2025 तक भेजने होंगेI